चतुर्थ अध्याय

से. रा. यात्री के आलोच्च उपन्यासों में चित्रित समस्याओं का अनुशीलन

किसी भी साहित्यकार का साहित्य -सृजन के पीछे कुछ-न-कुछ उद्देश्य छिपा रहता ही है । फिर एखाद समस्या का चित्रण करने के लिए अथवा समाज का मनोरंजन करने के लिए अथवा समाज का मनोरंजन करने के लिए भी साहित्यकृति का निर्माण किया जाता है । साधारणत: कोई भी लेखक अपने 'उपन्यास' में किसी-न-किसी सवाल, समस्या का शोध लेने की कोशिश करता है । डॉ.प्रतापनारायण टंडन कहते है — "प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रुप से प्राय: सभी उपन्यासों की रचना के पीछे कोई-न-कोई विशिष्टि उद्देश्य या जीवन के प्रति विशिष्ट दृष्टिकोन मिलता है । अर्थात लेखक जिस समाज में रहता है उस समाज को वह अपनी साहित्य-कृति से कभीं हटा नहीं सकता । सही अर्थो में समाज में जो समस्याएँ, सवाल है उन्हीं के चित्रण के उद्देश्य से लेखक साहित्यकृति का निर्माण करता है ।"[1]

डॉ. प्रतापनारायण टंडन 'हिंदी उपन्यास कला' इस ग्रंथ में उपन्यास के उद्देश्य या हेतु की चर्चा के साथ-साथ नीति-शिक्षा, मनोरंजन, कौतुहल-सृष्टि, सुधार भावना, समस्याओं का चित्रण, राजनीतिक उद्देश्य, मार्क्सवादी उद्देश्य, जीवन दर्शन का प्रकटीकरण इन सब उद्देश्यों की भी समन्वय चर्चा करतें है ।

समस्याओं का चित्रण करने के उद्देश्य से हिंदी - साहित्य में अनेक उपन्यासकारों ने उपन्यास - निर्मिती की है लेकिन 'प्रेमंचद' ने मुख्य उद्देश्यों को अपने ज्ञान-चक्षू के सामने रखकर ही साहित्य की निर्मिती की है । समस्याप्रधान उपन्यासों में सुधारवादी दृष्टि को ही प्रथम स्थान देनेवाले उपन्यासकार के रुप में प्रेमचंद का स्थान श्रेष्ठ हैं । उनके उपन्यास में विधवा समस्या, वेश्या समस्या, दहेज समस्या, अनमेल-विवाह समस्या और शोषण की समस्या, आदि समस्याओं का चित्रण किया गया है । उपन्यास के माध्यम से सामाजिक, पारिवारीक समस्याओं का चित्रण करना किसी भी लेखक को बंधनकारक नहीं हैं फिर भी उसका चित्रण करना यह लेखक का सामाजिक कर्तव्य ही है ।

उपन्यास में समस्याओं का चित्रण करते समय लेखक को वास्तविकता

की पहचान होना जरुरी है साथ ही लेखक जितनी सन्हृदयता से उस समस्या के वास्तव रुप के चित्रण का प्रयास करेगा उपना ही वह उपन्यास सफल होगा । डॉ. प्रतापनारायण टंडन कहते हैं - "मानव जीवन के विविध क्षेत्रों से संबधित भिन्न-भिन्न प्रकार की समस्याएँ आज जिस रुप में उपन्यास में उठायी जाती है, उससे यह स्पष्ट हो जाता है कि उपन्यास इस दृष्टिकोन से सब से अधिक समर्थ साहित्यिक माध्यम है परंतु किसी उपन्यास में उठायी गयी समस्याएँ और उनके प्रति लेखक का दृष्टिकोन जितने गहन स्तर पर सत्य का स्पर्श करेंगे उस कृति की सफलता की संभावनाएँ भी उतनी ही अधिक होंगी ।"[2]

साठोत्तरी उपन्यास साहित्य में अनेक सामाजिक समस्याओं का चित्रण किया गया है । उपन्यास विशिष्ट समुह पर अथवा जिस सामाजिक स्तर पर घटित होता है, उस स्तर का सूक्ष्म अध्ययन करके अत्यंत प्रामाणिकता से साहित्य निर्मित होता जा रहा है । कुछ उपन्यासों में सामाजिक समस्याओं को तीव्र रुप में चित्रित किया गया है परुंतु समस्या को यथार्थ रुप में चित्रित करने की प्रवृत्ति आज बढ़ती जा रही है ।

4.1. उपन्यास में चित्रित होनेवाली समस्याएँ -

समस्याप्रधान उपन्यास के स्त्रोत में अनेक समस्याओं का सहजता से चित्रण किया गया है । समस्याप्रधान उपन्यास के आर्थिक, सामाजिक, पारिबारीक यह प्रकार माने जा सक्ते है । समाज की जातिव्यवस्था, सामाजिक व्यवस्था, बंद, आंदोलन, मोर्चा इससे मानव जीवन की विदारक स्थिति की ओर भी आज लेखक देखता है और उसे अपनी रचना में अभिव्यक्त करता है । समाज की वास्तव स्थिति को चित्रित करनेवाला उपन्यास ही समस्याप्रधान उपन्यास कहलाया जा सकता है । सामाजिक समस्या की तुलना में पारिवारिक समस्याएँ अधिक है । भोगवाद, वैचारिक संघर्ष के साथ पती-पत्नी के बीच के तनाव, मानव का अंहकार, स्त्री को भोगवस्तु मानने की रीति, दहेज ऐसे अनेक सवाल उपन्यास विश्व को वास्तवता का दर्शन कराते है और उपन्यास का विषय भी बन जाते है । अंहभाव के कारण इन्सान आस-पास के लोगों से, रिश्तेदारों से दूर होता जा रहा है । ईर्ष्या, व्देष, अहं आदि से मानव अंतर्मन से व्यथित हो रहा है । सम्मिलित परिवार की कल्पना मिट रही है । समाज के इन वास्तव प्रश्नों ने उपन्यासकार को व्यथित किया है ।

आर्थिक समस्या ही पूरे सामाजिक समस्या की जड़ हैं । एक तरफ अत्यंत हीन-दीन, दरिद्री अवस्था तो दूसरी तरफ असीम अमीरी इसके कारण समाज के इन अमीर-गरीब लोगों में बीच की दरार पैदा हुई है । आज का उपन्यास इस आर्थिक समस्या का वास्तव चित्रण करता है । आज भोगवादी वृत्ति बढ़ रही है और आर्थिक समस्या से पीड़ित समाज की तरफ इन स्वार्थी, भोगवादी लोंगों का ध्यान ही नहीं हैं, इससे सामाजिक हानि हो रही है

उपन्यास साहित्य ने समाज में स्थित ज्वालाग्राही समस्याओं को प्रमुखता से मुखरता दी है । समस्याप्रधान उपन्यासों से समाज को एक नई दिशा देने का कार्य हो रहा है फिर भी आधुनिक युग की नवनवीन समस्याओं का समर्थ वास्तववादी चित्रण करने के लिए नवविचार से प्रेरित साहित्यकार की जरुरत है । राजनीति का अपने मतलब के लिए किया जानेवाला उपयोग, वैद्यकीय पेशा जो समाजसेवा का मूलस्रोत माना जाता है उसमे होनेवाली इन्सानियत की वाताहात, सुपरक्लोनव्दारा आनेवाली नई समस्या, शिक्षा व्यवस्था की दुर्दशा ऐसी अनेक समस्याओं को आज के उपन्यास साहित्य में अभिव्यक्त किया जा रहा है । समाज जीवन के विकास के परिणाम स्वरुप सामाजिक समस्याएँ निर्मित होती है । ये समस्याएँ मानवी विकास में बाधा पहुँचाती है । डॉ.वाय.बी.धुमाल के मतानुसार- "सन 1960 के पश्चात पूरा जनजीवन परिवर्तित हुआ । इस परिवर्तित जनजीवन में अनेक सामाजिक समस्याओं का निर्माण हुआ । ग्रामीण जनजीवन, नागरी जनजीवन, दलित जनजीवन और मानवी विकृतियों के संबंध में अनेक समस्याओं का निर्माण हुआ । यांत्रिकीकरण और औदयोगीकरण ने कई समस्याओं को जन्म दिया । शिक्षित नौकरी पेशावाली नारी अपनी नई समस्याएँ लेकर उपस्थित हुई । नौतिक-सांस्कृतिक मूल्य-विघटन एवं् निर्वासन ने नई समस्याएँ पैदा की । संयुक्त परिवार की टूटन और चुनावी राजनीति के परिणामस्वरुप कई समस्याएँ पैदा हुअी । महँगाई, बेकारी, जातीय भेदाभेद, सांप्रदायिकता तथा सेक्स संबंधि अनेकविध समस्याएँ साठोत्तरी कालखंड में जोर पकडती गयी । इस कालखंड के सामाजिक उपन्यासों में मानवी जीवन की सभी समस्याओं का अत्यंत विकसित रुप देखने को मिलता है । इन समस्याओं से समसामायिक यथार्थ के प्रति जागरुकता दर्शायी गयी । विभिन्न सामाजिक वर्गों तक घुसकर इस युग के उपन्यासों ने विविधमुखी सामाजिक समस्याओं को उकेरा । इस कालखंड में आदमखोरों के हाथों लुटती हुई नारी देह, व्यवस्था के नीचे रौंदा हुआ युवा-आक्रोश, आस्मिता के लिए संघर्षरत युवक-युवति आदि का चित्र यथार्थ रुप में सामने आता है ।"[3]

आज विकसित-अविकसित नर-नारियों की अनंत समस्याएँ हैं । नयी-पूरानी मान्यताओं के बीच संघर्ष की समस्या, पति-पत्नी के तनावपूर्ण संबंधों से निर्मित संतान के पालन एवं विकास की समस्याएँ, शिक्षित-अशिक्षित युवतियों के विवाह की समस्याएँ, भ्रष्ट प्रबंध व्यवस्था के कारण शिक्षा - संस्थाओं में योग्यता के हनन की समस्याएँ, प्रशासन के अधिकारियों के भ्रष्टाचार से निर्मित समस्याएँ, बंद आयोजन से निर्मित, तोड़-फोड़, आगजनी, हत्याकांड की समस्याएँ, बाजारु फिल्मों से निर्मित समस्याएँ, क्लबों और होटलों से निर्मित भ्रष्ट जिंदगी की समस्याएँ, पाश्चात्य संस्कृति की नकल से उत्पन्न समस्याएँ आदि विविध समस्याओं ने इस कालखंड को ग्रस्त लिया है । इसी पृष्ठभूमि पर हम यह देखेंगे कि से.रा.यात्री के उपन्यासों में इनमें से कौन-सी समस्या उभरी है ।

4.2. से.रा.यात्री के आलोच्च उपन्यासों में चित्रित समस्याएँ

यात्री अत्यंत संवेदनशील और भावुक साहित्यिक है । उन्होंने अपने उपन्यासों में 'नारी समस्या' को केंद्र बिंदु बनाया है । नारी दु:ख का चित्रण करते वक्त यात्री उस समस्या की कारण मीमांसा खोजने के बजाय नारी की व्यथा की तीव्रता को अभिव्यक्त करते है । अत्यंत संयम से नारी व्यथा को अपने पात्रों के माध्यम से सहजता से उजागर करते है । 'बीच की दरार' में चित्रित नीना का शोषित चरित्र देखने पर यात्री ने उसके मुख से उसकी दर्दभरी दास्तान प्रस्तुत की है, इसे पढ़कर पाठक हड़बड़ा जाता है । साथ ही 'दराजों में बंद दस्तावेज' की कॉलगर्ल करुणा की मनोव्यथा और मानसिक कुंठा को सहजता से हमारे सामने प्रस्तुत किया है । इन समस्याओं का चित्रण करते वक्त यात्री ने अपनी कलम में बीभत्सता, अश्लिलता आने नहीं दी है ।

सामाजिक, पारिवारिक समस्याओं को सफलता से चित्रित करने का कौशल यात्री ने प्राप्त किया है । समस्याओं को अभिव्यक्त करते समय यात्री अतिशयोक्ति को नाममात्र भी स्थान नहीं देते और न ही लेखक के नाते निवेदन के आधार से समस्या की चर्चा करते हैं । इसी कारण यात्री पाठक को अंतर्मुख कराने की कोशिश में सफल हो जाते है ।

4.2.1. नारी - शोषण - भारतीय पुरुषप्रधान संस्कृति में सदियों से नारी को गौण स्थान दिया गया है । भारतीय महिलाओं की स्थिति पश्चिमी नारियों की तुलना में बहुत भिन्न है । आज़ादी के संघर्ष ने नारी को घर से बाहर आने का अवसर प्रदान किया । आज़ादी के पश्चात नारी को वैधानिक समानाधिकार मिले परिणाम स्वरुप सभी स्तरों पर

की नारियों को परिवर्तन की पृष्ठभमि मिली परंतु भारत की औसत नारी आज भी सामाजिक दृष्टि से पिछड़ी नजर आ रही है । वह अपने हितों या हकों से अनभिज्ञ रहीं है । महिला वर्ष (1975) ने नारी को अपने हकों और हितों की अच्छी पहचान करा दी है फिर भी आज भी नारी पुरुष के रक्षाकवच में पलना हितकारी समझती है । पुरुष की समार्पिता बनकर रहना पसंद करती है । आज भी भारतीय नारी सही अर्थ में आजाद नजर नहीं आ रही है । परिणाम स्वरुप नारी जीवन की अनेक समस्याएँ समाज के सामने उभरकर आ रही है । डॉ. वाय. बी. धुमाल के मतानुसार "नारी जीवन की मजबुरी, आर्थिक विपन्नता, पुरुषों के रक्षाकवच में पलने की प्रवृत्ति के कारण नारी के सामने आज अनेकविध समस्याएँ खड़ी है । विधवा नारी, परित्यक्ता नारी, फँसाई गयी नारी, नौकरी पेशावाली नारी, वेश्या तथा 'कॉलगर्ल' नारी, आदि नारी के विभिन्न रुप नारी जीवन की गंभीर स्मस्याएँ पेश कर रहे है ।"[4]

सामाजिक समस्याओं में 'नारी शोषण' एक पूरानी और परंपरागत लेकिन महत्त्वपूर्ण समस्या है । प्राचीन काल सें अनेक स्तर पर नारी का शोषण किया जा रहा है और उसका, समर्थन भी बड़े चाव से किया जाता है । पारिवारीक, सामाजिक, आर्थिक ऐसे अनेक माध्यमों से नारी का शोषण किया जाता है, उसका समर्थन करनेवाली अनेक घटनाएँ है ।

पारिवारीक जीवन में नारी को गुलाम समझा जाता है । नारी की मानसिकता को कोई भी समझने की कोशिश नहीं करता । अगर नारी के स्वयं के संदर्भ में भी कोई घटना उसकी इच्छा के विरुध्द घटित हो रही हो तो भी उसे उस अत्याचार को सहन करना पड़ता है यहीं पारंपारिक संकेत है । अगर किसी नारी को चार दीवारों के बीच गुलामों की तरह जीने से मुक्ति चाहिए हो तो भी उसे वह सहज साध्य नहीं होता । पंडिता रमाबाई जैसी एखाद नारी अगर घर से बाहर जा कर खुले - आम अपने विचार व्यक्त करने लगे अथवा अपने बुध्दि चातुर्य एवं स्वेच्छा से बर्ताव करने लगे तो उसकी सरे आम उपेक्षा की जाती है, उसको अपमानित किया जाता है । पुरुषप्रधान संस्कृति में कोई भी नारी अपने को स्वतंत्र व्यक्तित्त्व के रुप में जाहिर करने लगे तो पुरुषोंद्वारा उसका निषेध किया जाता है ।

से.रा.यात्री के अत्यंत संवेदनशील और भावुक होने के कारण उन्होंने इस समस्या को संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया है । यात्री के 'बीच की दरार' और 'दराजों में बंद दस्तावेज' इन उपन्यास्सों में नारी समस्या को अत्यंत प्रभावी रुप प्राप्त हुआ है । इन दोनों उपन्यासों में चित्रित 'नारी - शोषण' अतिरंजक नहीं है । 'दराजों में बंद दस्तावेज'

उपन्यास में यात्री ने 'करुणा' नामक 'कॉलगर्ल' की व्यथा प्रस्तुत की है तो 'बीच की दरार' उपन्यास में 'नीना' इस सिने-अभिनेत्री पर पती व्दारा होनेवाले अत्याचार एवं शोषण को अभिव्यक्त किया है ।

'करुणा' का चित्रांकन करते समय यात्रीने करुणा के कॉलगर्ल होने का उल्लेख छोटे-मोटे संकेतोंव्दारा जरुर दिया है । करुणा का उसकी मौसी के साथ रहते समय उपन्यास का नायक -परेश उसकी मानसिक घुटनशीलता को महसूस करता है । यात्री ने परेश का करुणा के घर से बाहर जाते समय उसे करुणा का पता पूछते हुए मिला एक युवक, रिश्तेदार के रुप में करुणा के यहाँ आया अमीर सेठ, करुणा व्दारा उपन्यास के अंत में परेश को लिखा खत आदि बातों से करुणा के कॉलगर्ल होने के संकेत मिलते है । यहाँ यात्री बुध्दिकौशल से काम लेते है और इस व्यवसाय का गंदा-घिनौना रुप पाठकों के सामने लाने से बचते है । मौसी व्दारा बचपन में किये गये पालन-पोषण पर व्यंग्य करते हुए करुणा कहती है - "मौसी ने बहुत बचपन से मेरा पालन पोषण करके मेरी देह बचाई है (मेरी देह बची है - इससे बड़ा निर्दय व्यग्यं और क्या हो सकता है)"[5] करुणा व्दारा परेश को लिखे खत के माध्यम से नारी शोषण की कल्पना स्पष्ट होती है । करुणा 'देह बचाई' है, ऐसा लिखती है, इसी से यह स्पष्ट होता है कि केवल पैसे कमाने की लालच में देह व्यापार के उद्देश्य से ही मौसी ने करुणा का पालनपोषण किया है । जिस तरह किसी बकरी को बली देने के हेतु उसे पाल-पोसा जाता है, वहीं हेतु अगर इन्सान के संदर्भ में रखा जाता है तो यह बात कितनी घृणास्पद और शर्मनाक है इसकी कल्पना ही न करना उचित है ।

करुणा कहती है - "मनुष्य का वास्तव में अपना वहीं है, जो उस पर बाहर से लादा हुआ न हो । जो जबरदस्ती आरोपित किया गया है, आत्मा में पूरी तरह आत्मसात नहीं हुआ वह किसी का अपना कैसे हो जाएगा ।"[6] करुणा के इस कथन से यह सूचित होता है कि वह उसकी इच्छा के विरुध्द 'कॉलगर्ल' का जीवन जी रही है, जो उस पर जबरद्स्ती थोंपा गया है । उसकी मजबूरी का फायदा उठा कर उसको इस दर्दनाक, नरक से बदत्तर यातना के प्रवाह में धकेल दिया गया है । 'करुणा' के व्यक्तित्त्व के माध्यम से यात्री ने नारी शोषण की व्यथा, वेदना को ने अभिव्यक्त किया है । करुणा की व्यथा, दु:ख उसके अंतर्मन में बंदिस्त है जिससे उसकी घुटनशीलता स्पष्ट होती है ।

करुणा को मौसी ने 'सोने का अंडा देनेवाली मूर्गी' समझा था । वह करुणा के मन का कभी खयाल नहीं रखती है । अत्यंत घिनौना जीवन जीने के लिए करुणा मजबूर बन गयी है । वह परेश को कहती है - "मैं यहाँ नहीं रह सकती -मैं इस जिंदगी से

नफरत करती हूँ, मैं बहुत अकेलापन महसूस करती हूँ, परेशबाबू, आप मुझे यहाँ से कहीं बहुत दूर ले चलिए ।"[7] किंतु करुणा को अपने गत आयुष्य का एहसास है । अपनी वजह से किसी की जिंदगी तबाह न हो यहीं वह कामना करती है । करुणा ने स्वंय यह स्वीकार किया कि वह किसी की जीवन साथी बनने के लायक नहीं है । परेशव्दारा जब उसे अपना जीवन साथी बनाने का निश्चय किया जाता है तब करुणा कहती है - "मैं बहुत गेरी हुई हूँ । जब मैं अपनी जिंदगी के बारे में सोचती हूँ तो घृणा से सिहर उठती हूँ ।"[8] अपनी इस शर्मनाक जिंदगी की वजह से करुणा अपने आप से नफरत करती है । उसको यह डर लगता है कि यादि परेश को अमना असली रुप पता चलेगा तो वह उसका मुँह भी नहीं देखेगा ।

करुणा जैसी कितनी लड़कियाँ अपनी इच्छा के विरुद्ध इस घिनौने व्यवसाय में घसीट चुकी है, जिससे उनकी पूरी जिंदगी उध्वस्त हो चुकी है । इसका ज्वलंत उदाहरण है नेपाल की तुलसी थापा का - "सन 1982 को नेपाल से अपहरण करके तेरह साल की तुलसी थापा को मुंबई में वेश्याव्यवसाय करने पर मजबूर किया गया । सोलह साल से इस दर्दनाक जिंदगी को मजबूरी मे ढ़ोते - ढ़ोते डेढ़ साल पहले दुर्देवी तुलसी एड्स का शिकार हुई, उसी में उसका अंत हो चुका ।"[9] करुणा की व्यथा इसी तरह की नारी शोषण का प्रतिनिधित्त्व करती है । यात्री ने नारी शोषण की समस्या का बड़े सक्षमता से चित्रण किया है ।

'बीच की दरार' उपन्यास की नायिका 'नीना' पुरुषप्रधान संस्कृतिव्दारा होनेवाले नारी शोषण की शिकार हो चुकी है । उसे अपने स्वत्व को खोना पड़ा, व्यक्तिगत विचार स्वातंत्र्य को खो कर उसे एक जेलखाने की कैदी की तरह जिंदगी गुजारनी पड़ी । शिक्षा लेने की उम्र में पैसों के खातिर नीना को नाटक में काम करना पड़ता था । नाटकों में सफलता प्राप्त होने पर वह विठोबा की सहायता से सिनेमा में काम करने लगी । पंद्रह साल से कम उम्र में विठोबा के साथ उसका विवाह कराया जाता है । नीना के सफल अभिनेत्री बनने पर विठोबा के स्वभाव में बदलाव आता है । वह (विठोबा)नीना पर अपना अधिकार जमाने लगा । विठोबा ने पति होकर भी पैसों के खातिर नीना को घटिया फिल्मों में काम करने पर मजबूर किया । नीना को किसी से मिलने-जुलने से भी प्रतिबंध लगाया । वह नीना पर अत्याचार करने लगा ।

नीना की जिंदगी कटपुतली की तरह बन गयी थी । विठोबा के कहने पर उसे नाचना पड़ता है । विठोबा की दबाव नीति से नीना को बंदिस्त जिंदगी गुजारने के लिए लाचार होना पड़ा । विठोबा की अचानक मौत हो जाती है । विठोबा से उत्पन्न हुई लड़की थी

डिप्थेरिया रोग के कारण मर जाती है। पूर्वायुष्य के सारे भावबंध मिट जाने के कुछ समय उपरांत नीना नागपाल के फिल्म में काम करने को तैयार हो जाती है। फिल्म सुपरहिट होने के कारण इस सफलता से नागपाल सुप्रसिद्ध सिने-निर्देशक और नीना अग्रक्रम की अभिनेत्री बन जाती है। नागपाल नीना के सौंदर्य से आकर्षित हो कर उसके सामने शादी का प्रस्ताव रखता है। नीना नागपाल के इस प्रस्ताव को स्वीकर करती है, और एक बार फिर दुदैव का शिकार बन जाती है।

नीना का शोषण करनें में नागपाल विठोबा से भी एक कदम आगे है। वह नीना को फिल्मों में काम करने नहीं देता। वह नीना को एक 'मादी' के रुप में इस्तेमाल करता है। वह सुप्रसिद्ध सिने-निर्देशक की बीवी इसके सिव नीना की कोई पहचान कराने नहीं देता। नागपाल नीना का शारीरिक और मानसिक दोनों स्तर पर शोषण करने लगता है। नीना इस चक्र से निकल भी सकती थी किंतु समाज के भय से वह यह साहस नहीं कर सकती। पैसे के बलबूते पर नागपाल ने अपने प्रशंसक निर्माण कर दिये थे, जो नीना की बदनामी किसी भी हालत मे करते।

नागपाल दुहरी भूमिका निभा रहा है। उसका दुहरा व्यक्तित्त्व समाज के सामने एक और घर में एक रहता है। समाज में वह प्रतिष्ठित और मृदु, सुस्वभावी के रुप में नाम प्राप्त कर चुका था किंतु पत्नी को वह एक भोगवस्तु से अधिक नहीं मानता है। पत्नी की मानसिकता का विचार करना वह जरुरी नहीं समझता। पत्नी का मतलब वह एक सुंदर, कमनीय देह समझता है। वासना की तृप्ति का साधन, इतना ही पत्नी का अस्तित्त्व उसके सामने है। नीना जैसी इस देश में अनेक-सी नारियाँ है जो पुरुष प्रधान संस्कृति के पाटों में निर्मम रुप से पीसी जा रही है। ऐसी नारियों का रुदन चार दीवारों के अंदर ही सुनाई देता है। नीना की गृहस्थी उसके लिए एक 'बंदीखाना' रही है। उसका अभिनेत्री के रुप में पूरा करीयर दबता जा रहा है।

'नीना' का शोषण प्रतिनिधिक स्वरुप का है। नीना के व्यवसाय के सिवा भी कई नारियाँ लैंगिक, मानसिक, शारीरिक अत्याचार की शिकार हुई हैं। दप्तर में नारी का लैंगिक शोषण करनेवाला समाज अपने घर में भी चूप नहीं बैठता। पुरुष समाज ने अपने अहंभाव से नारी को दासी बना रखा है। इसी समाजव्दारा नारी को 'महान' बनाया जाता है किंतु वास्तब में उस पर अत्यंत क्रुर, अन्याय, अत्याचार किये जाते है। नारी पर होनेवाले अत्याचार का प्रतीक नीना के चरित्र से यात्री प्रस्तुत करते है।

नागपाल के घर से बाहर जाते ही नीना की प्रतिक्रिया देखने लायक है - "कम-से-कम एक रात तो उससे मेरा पिंड छुट ही सकता है - वह मेरी हर रात को नर्क बना देता हैं ।"[10] फिल्मी दुनिया की जगमगाहट में रहनेवाले नागपाल-नीना की परिवारिक जीवन की झाँकी देखने से यह एहसास होता है कि पुरुष स्वयंकेंद्रित है । अपने स्वार्थ के लिए, अपनी खुशी के लिए दूसरों को दु:ख देने में भी संकोच नहीं करता है । नागपाल बाहरी दुनिया को हमारा दांपत्यजीवन अत्यंत सुखी है ऐसा दिखाता है, किंतु नीना को 'भोगवस्तु' के परे कोई स्थान नहीं देता । नागपाल की दृष्टि में नारी केवल गृहस्थी चलानेवाली, अपने बच्चों को प्यार से बड़ा करनेवाली और पती की चाह पूरी करनेवाली दासी है । नारी शोषण के परिणाम स्वरुप पति-पत्नी के बीच यह पीड़ाजन्य दरार उभर उठी है ।

पुरुषप्रधान संस्कृति में पुरुषोंव्दारा नारी का शोषण किया जाता तो है लेकिन नारी भी नारी का शोषण करने में क़ाफ़ी माहिर है, 'दराजों में बंद दस्तावेज' की मौसी इसका उदाहरण है ।

4.2.2. मानसिक कुंठा की समस्या -

घुटन या कुंठा मानवी जीवन का अभिशाप है । इससे मनुष्य पूरा बर्बाद होता है । मनुष्य में निर्मित कुंठा उसके व्यक्तित्त्व को ही खा जाती है । यह कुंठा बाहय दबाव या शोषण से बढ़ती है । कभी इच्छा के विरुद्ध कुछ करने से भी कुंठा बढ़ती है । से.रा.यात्री के उपन्यास 'बीच की दरार' और 'दराजों में बंद दस्तावेज' में 'नीना' और 'करुणा' इन दो नारियों के जीवन की कुंठा को चित्रित किया है । नारी शोषण के परिणामस्वरुप यह मानसिक कुंठा इन दो नारियों में निर्माण हुअी है । हम यहाँ दोनों उपन्यास की नायिकाओं की कुंठा का अलग-अलग चित्रण करके से.रा.यात्रीने इस दिशा में कहाँ तक सफलता प्राप्त की है, इस पर सोचेंगे ।

यात्री के 'बीच की दरार' और 'दराजों में बंद दस्तावेज' इन दो उपन्यासों में मानसिक कुंठा की समस्या चित्रित हुई है । इन उपन्यासों में क्रमश: 'नीना' और करुणा इन व्यक्तिरेखाओं की मानसिक कुंठा यथार्थ रुप में चित्रित हुई है । नीना और 'करुणा' की व्यथा एक ही है, दोनों शोषण का शिकार हुई है । 'करुणा' जैसी शिक्षित युवती मौसी के दबाव के कारण कॉलगर्ल का व्यवसाय करती है, तो 'नीना' एक समय की सुप्रसिद्ध सिने-अभिनेत्री अपने पती के शारीरिक, मानसिक शोषण से तंग आ गयी है ।

नीना और करुणा इस शोषण के जाल से मुक्त हो नहीं सकती इस बात का एहसास उन दोनों को है, जिसके कारण उनकी मनोवस्था, मानसिक कुंठा यात्रीजी ने अपने उपन्यास के माध्यम से स्पष्ट करने का प्रयास किया है ।

'करुणा' की जिंदगी शुरु से ही कष्टप्रद है । जिस उम्र में अपनी सुखी जिंदगी के ख्वाब देखने चाहिए, उस उम्र में करुणा को 'कॉलगर्ल' जैसा घिनौना व्यवसाय करने पर मजबूर किया गया है । 'मजबूर किया गया' ऐसा कहने का कारण करुणा को उसकी इच्छा के विरुद्‌ध इस व्यवसाय में घसीटा गया है । करुणा इस नाटकीय जिंदगी से छुटकारा पाना चाहती हैं किंतु मुक्ति के सारे दरवाजे उसके लिए हमेशा के लिए बंद हो चुके हैं इसी कारण करुणा का जीवन मानसिक कुंठा से ओत-प्रोत भरा है । इच्छा के विरुद्‌ध 'कॉलगर्ल' का व्यवसाय करने को बाध्य होने के कारण करुणा मानसिक स्तर पर बिल्कुल टूट चुकी है । "मेरी देह बची है - इससे बड़ा निर्दय व्यंग्य और क्या हो सकता है"[11] इस कथन से केवल देहरुप से ही अस्तित्त्व में रहनेवाली करुणा की मानसिक अवस्था यहाँ प्रकट होती है ।

करुणा हमेशा किसी-न-किसी विचार में डूबी रहती हैं । पूछे सवालों को बखूबी से टालना, बीच-बीच में बेचैन होना तो कभी-कभी आक्रमक होना यह उसकी मानसिक कुंठा के ही उदाहरण हैं । परेश जब पूछता है कि इतनी कम उम्र में गंभीर रहना कहाँ से सीखा ? तो करुणा कहती है - "यह सब सीखा नहीं जाता परेश बाबू ! जिंदगी बहुत कुछ स्वयं सीखा देती है ।"[12] जिंदगी की वास्तविकता का सामना करते समय होनेवाली करुणा की मनोवस्था अत्यंत तप्त हैं, भयंकर हैं । से.रा.यात्री ने करुणा की मनोवस्था, मानसिक कुंठा का भयंकर रुप अत्यंत समर्पक घटना और शब्दों से प्रस्तुत की है ।

'नीना' भी इसी तरह की मानसिक कुंठा में कई सालों से जी रही है । शादी का अर्थ भी न समझने की उम्र में विठोबा से शादी हो जाती है और उसके शोषण का शिकार बन जाती हैं । पती की हुकुमत चलानेवाले विठोबा के कारण नीना मानसिक कुंठा तथा शोषण का शिकार हो जाती है । विठोबा के चाहे जैसा बर्ताव करने के कारण नीना अपना वजूद खो बैठी । विठोबा की तानाशाही के कारण उसका अस्तित्त्व ही नहीं रहा और वह मानसिक दबाव में रहने लगी । "विठोबा ने कभी चैन नहीं लेने दिया था । उसकी इस अप्रत्याशित मृत्यू से मैं दु:खी होने के बजाय त्रस्त ही आधिक हुई ।"[13] विठोबा की मौत के बाद नागपाल से शादी करके भी नीना सुखी नहीं हो सकी बल्कि विठोबा से भी ज्यादा नागपाल उसका शोषण करने लगा । समाज में नागपाल एक सज्जन के रुप में चिरपरिचित

होने के कारण नीना अपनी व्यथा कभी जाहीर न कर सकी जिसके कारण दिन-ब-दिन नीना मानसिक कुंठा की शिकार बन गयी ।

केवल बच्चों को जन्म देनेवाली मादा और एक प्रसिद्ध, सफल सिने-निर्देशक की पत्नी बन कर जिंदगी बीताना नीना को मंजूर नहीं था फिर भी मजबूर हो कर नागपाल की घर गृहस्थी चलानी पड़ी है । कामांध नागपाल की इच्छा पूर्ति का साधन इससे अधिक कीमत नीना को नहीं थी । नीना के मन की व्यथा को यात्री ने बडे कौशल के साथ 'बीच की दरार' में चित्रित किया है । नीना की गतिविधियों से और उसके विचारों से उसकी मानसिक अवस्था को यात्री ने प्रभावपूर्ण ढंग से चित्रित किया है । नागपाल की यौन-वासना ने भी उसकी कुंठा को और बढ़ दिया है ।

मि. मलिक के माध्यम से नीना की गतिविधियों का यात्री का यात्री ने बखुबी से चित्रण और वर्णन किया है । मि. मलिक का स्वगत इस कुंठाजन्य स्थिति पर अधिक प्रकाश डालता है - "मैंने अपने जीवन में सैंकडो महिलाओं को दारु पीते हुए देखा हैं - उनमें से कुछ अधिक भी पी जाती होंगी लेकिन उस रात से पहले मैंने किसी औरत को शराब को पानी की तरह गटकते नहीं देखा था । शराब गले में जाती है तो एक तल्खी किसी-न-किसी रुप में चेहरे पर उभर उठती है लेकिन मैंने नीना के चेहरे पर इस कड़वी चीज़ की कोई प्रतिक्रिया नहीं देखी ।"[14] मलिक के यह मनोद्‌गार नीना की मानसिक कुंठा का मूर्तिमंत रुप ही है । चार दीवारों में बंद नीना की अपनी व्यथा किसी के समक्ष कहने का अवसर नहीं मिलता यहीं मूल वेदना है । इस व्यथा पर कोई भी इलाज न मिलने से नीना की होनेवाली मानसिक कुंठा अत्यंत कारुण्यपूर्ण हैं ।

"मैंने उससे शादी नहीं की । यह मेरी सत्यानाशी उमींदे ही थी जिन्होंने मुझे रोंद डाला । में एक बहुत कच्ची और नाजुक उम्र में सपनों के हाथो बरबाद हुई ।"[15] नीना के मन में आवेश का तुफान कई सालों से दबा चुका है और नीना को अपनी व्यथा को ही मूक प्राणी की तरह सहन करने के सिवा और कोई रास्ता नहीं है । 'बीच की दरार' इस उपन्यास का आत्मा ही नीना की व्यथा, वेदना है । लेकिन यह कुंठा चार दीवारों में बंद है । नीना की मानसिक कुँठा में ही उसकी वेदना और आक्रोश छिपा है । नीना की कुंठा का यथार्थ चित्रण करने में यात्री सफल हुए है ।

4.2.3. कॉलगर्ल की समस्या - 'दरजों में बंद दस्तावेज' में करुणा और मौसी दोनों परिवार के ही सदस्य है । मौसी ही करुणा का शारीरिक, मानसिक शोषण करती

है । इसके पहले गरीब, पीड़ित, दुर्बल नारियाँ अपने जिस्म का सौदा करके उदरपूर्ति किया करती थी । आज सभ्य, प्रतिष्ठित, पूँजीपति सभ्यता में नगरों और महानगरों में कॉलगर्ल का बाजार गर्म है । पाश्चात्य सभ्यता पर आधारित यह सेक्स पूर्ति का बड़े-बड़े अमीरों का यह माध्यम बन बैठा है ।समाज की प्रतिष्ठित नारियाँ अपने पतिसे कामनापूर्ति न होने पर, पैसा प्राप्ति के उद्देश्य से या किसी के व्दारा जबरदस्ती से इस व्यवसाय में प्रविष्ठ होने पर कॉलगर्ल की समस्या उभर रही है । इस भयावह समस्या के परिणाम स्वरुप आज भंयकर बिमारियों का प्रार्दुभाव भी हो रहा है । से.रा.यात्री ने 'दराजो में बंद दस्तावेज' में इस समस्या का प्रस्तुतीकरण किया है ।

'दराजों में बंद दस्तावेज' की नायिका 'करुणा' कॉलगर्ल है । बचपन में ही करुणा के माँ-बाप गुजर गये । किसी मौसी ने उसका पालन-पोषण किया है । जब मौसी बूढ़ी हो चुकी मौसी ने तो पैसे कमाने के लिए करुणा के असहायता का फायदा उठाकर उसे जबरदस्ती कॉलगर्ल बनाया । करुणा ने अपनी इच्छा के विरुद्ध मजबूरी में ही इस घिनौने व्यवसाय को स्वीकार किया है । मौसी ने पैसौं की लालच में जबरदस्ती करुणा को इस 'दलदल' या 'किचड़' में ढकेला है ।

'करुणा' परेश से प्यार करती है । वह परेश की जीवनसाथी बनकर अपनी आनेवाली जिंदगी खुशी से जीना चाहती है । करुणा परेश को अपना जीवन समर्पित करके इस किचड़भरी कॉलगर्ल की जिंदगी से मुक्त होना चाहती है किंतु करुणा अपना पूर्वायुष्य भूल नहीं सकती । उसके जीवन की असालियत उसे घर-गृहस्थी के सपने भी बूनने नहीं देती क्यों कि उसका कॉलगर्ल होना उसके सपनों को मिटा देता है ।

करुणा 'कॉलगर्ल' होने के बावजूद अत्यंत प्रामाणिक और संवेदनशील है । अगर करुणा चाहती तो परेश को धोखा दे सकती थी मगर वह ऐसा नहीं करती । परेश के प्रति अपना प्यार दिल में लिए वह परेश की जिंदगी से हमेशा के लिए चली जाती है । अपने पर जबरदस्ती थोपे गये इस घिनौने व्यवसाय से वह कभी भी मुक्त नहीं हो सकती, इस विदारक सचाई का एहसास होने के कारण करुणा अपने भविष्य के सारे सपनो को दिल में ही दबाकर अपने 'कॉलगर्ल' जीवन को चूपचाप ढोती रहती है ।

कॉलगर्ल की समस्या समाज की भयानक वास्तव समस्या है जिसका हल कोसों दूर है । इस घिनौने व्यवसाय में जीनेवाली नारियाँ मुक्ति के लिए तड़फती है मगर उन्हें समाज में आम नारी की तरह स्वीकारा नहीं जाता । 'कॉलगर्ल' चाहे कोई भी हो, वह अगर स्वेच्छा से बनी हो या जबरदस्ती से लेकिन उनके इस घिनौने व्यवसाय से वापसी के सारे दरवाजे बंद हो जाते है ।

4.2.4. आर्थिक दुर्बलता की समस्या -

आज बीसवी सदी के अंतिम दशक के अंतिम पडाव पर खडे रहकर हम देख पाते हैं कि एक तरफ देश में विकास की गति तेज गति से आगे बढ रही है तो दुसरी ओर समाज का उपेक्षित वर्ग आर्थिक दुर्बलता के कीचड़ में धसता जा रहा है । आज आर्थिक उदारीकरण, मुक्त अर्थव्यवस्था, जागतिकीकरण आदि बड़े-बड़े भूल-भूलैय्या वाले शब्द हमारे सामने उभर रहे हैं परंतु इससे सामान्य व्यक्ति के आर्थिक स्थिति में कोई बदलाव नहीं हो रहा है । इस समस्या पर से.रा.यात्री ने 'दराजों में बंद दस्तावेज' उपन्यास में चिंतन करके आर्थिक दुर्बलता को पाटने के लिए करुणा को जिस्म का सौदा कैसे करना पड़ता है । इस पर गंभीरता के साथ चिंतन किया है ।

'दराजों में बंद दस्तावेज' उपन्यास में करुणा के शोषण का कारण आर्थिक दुर्बलता ही है । रुपयो की वजह से आपसी रिश्ते-नाते, आत्मीय व्यवहार होते है, इसका यह उपन्यास उदाहरण है । मौसी बुढ़ापे में हमेशा बीमार रहती है, इसीलिए करुणा को स्वयं का और मौसी का पेट पालने के लिए 'कॉलगर्ल' का व्यवसाय करना पड़ता है । सच तो करुणा को कॉलगर्ल बनने पर मजबूर किया गया था । परेश को लिखे खत में करुणा कहती है कि मौसी ने बचपन से उसे पाला पोसा है - "अब उनके शरीर को चलाना मेरा काम है ।"[16] इससे यात्री यह सूचित करते है कि आर्थिक समस्या के कारण ही करुणा ने इस व्यवसाय को मजबूरी से स्वीकार लिया है । करुणा प्रसिद्ध अंग्रेजी लेखकों की किताबे पढ़ती है या वह जो विचार व्यक्त करती है उससे यह अनुमान निकलता है कि करुणा एक सुशिक्षित युवती है तो फिर वह कोई नौकरी क्यों नहीं कर सकती इसका उत्तर यहाँ मिलता नहीं । अपने को और मौसी को जिंदा रखने के लिए वह कोई छोटी-मोटी नौकरी कर सकती थी परंतु इस पर यात्री ने कुछ भी विचार नहीं किया है ।

'सुबह की तलाश' का नायक सतीश नौकरी के लिए भटकता है किंतु उसकी नौकरी पाने के लिए की मेहनत उतनी तीव्रता से स्पष्ट नहीं हो पायी है । सतीश को अपने माँ-बाप को पैसे भेजना जरुरी है तो उसका भी सूक्ष्म विवरण कहीं भी नहीं हो पाया है । लगता है कि आर्थिक स्थिरता से ज्यादा मानसिक स्थैर्य, स्थायित्त्व, समाधान जहाँ मिलेगा सतीश वहीं काम करना चाहता है । नौकरी के लिए भटकनेवाले युवक सतीश की यह कहानी है । सतीश कहता है - "सारी चीजों और रिश्तो का आधार तो आर्थिक होगया है ।"[17] किंतु पैसे कमाने के लिए उसके (सतीश के) और उसके पिता के बीच हुए संघर्ष का चित्र भी यात्री ने प्रस्तुत नहीं किया है । सतीश के मतानुसार अगर रिश्तों

का आधार तो आर्थिक हो गया है तो फिर सतीश को राकेश के घर में पनाह कैसे मिली इसका कोई उत्तर नहीं है । अर्थात सतीश के विचार परस्पर विरोधी लगते है ।

आज समाज में आर्थिक समस्या काफी बढ़ गयी है । आर्थिक अर्थात रुपयों के खातिर् इन्सान अपने सभी रिश्ते अचानक ही तोड़ देता है यहाँ तक कि अपना ही आप्तस्वकीय अपने रिश्तेदार को पैसों के लिए बेच देता है, इसका उदाहरण 'दराजों में बंद दस्तावेज' की मौसी है । इसतरह आर्थिक दूर्बलता की वजह से ही व्यक्ति -व्यक्ति के बीच दरारें पडती है ।

4.2.5. पति - पत्नी तनाव की समस्या -

आज नगरीय एवं् महानगरीय जीवन में यह समस्या गंभीर बनती जा रही है । नारी-मुक्ती आंदोलन, नारी स्वतंत्रता की माँग के कारण नारियो में अस्मिता जागृत होने लगी है । इस स्थिति में परंपरागत पुरुष प्रधान संस्कृति के पायीक पुरुष नारी के प्रति अपनी पुरानी परंपरागत दृष्टि रखते हैं । इसके परिणाम स्वरुप दांपत्य जीवन में टकराव की स्थितियाँ उत्पन्न हो रही है । पति - पत्नी दोनों करियर करना चाहतें हैं परंतु प्राथमिकता किस के करियर को देनी चाहिए, इस पर सोचते समय ईर्ष्या-द्वेष का निर्माण होता है और दापत्य जीवन में तनाव उभरता है । ये तनाव इस हद तक पहुँचते है कि जिससे या तो गृहस्थी टूट ताती है या तो पति -पत्नी में से एक की खुदखुशी होती है । यह एक गंभीर समस्या है परंतु से.रा.यात्री ने इस समस्या पर चिंतन करते समय पुरुष -प्रधान संस्कृति को नायिका पर हावी कर दिया है ।

'कांच की दरार' में नीना और नागपाल के परिवारीक संबंध ऊपर से प्यार भरे दिखाई देते है किंनु नागपाल और नीना मानसिक स्तर पर पूरी तरह टूट चुके है । घर-संसार के बारें मे नीना और नागपाल के विचार पूर्णत: भिन्न है । नागपाल की दृष्टि से नारी सिर्फ 'मादा' है । उसे अपनी पत्नी की भावना से कोई मतलब नहीं है । "मै यकीन के साथ कह सकता हूँ कि सुखी बीवी होना-अच्छी माँ होना किसी बड़े आर्ट से रत्ती भर कम नहीं है ।"[18] पत्नी सिर्फ पती को शरीरसुख देनेवाली, पती के अच्छे, बुरे बर्ताव को मूक सहनेवाली, उसके अत्याचार के खिलाप एक लब्ज भी न बोलनेवाली 'मादा' ऐसी नागपाल की धारणा है । जिसके कारण उनके दांपत्य जीवन में तनाव की समस्या निर्माण हुई है ।

नीना आधुनिक और स्वतंत्र विचारों की पक्षघर है । "यह कोई जरुरी तौर पर सच नहीं है कि औरतों के घर सम्होले रहने से उनके पतियों की जिंदगी स्वर्ग बन जाये ।

यह सारे दावे झूठे और औरत को बहलाने फुसलाने वाले है।"[19] नीना का यह कथन नारी-स्वांतत्र्य का पुरस्कार करनेवाला है लेकिन स्वयं नीना मात्र असहाय्य है । नागपाल जैसे पती की हुकुमत कीताबेदार बन चुकी है, जिससे उसकी मुक्ति नामुमकिन है । नीना और नागपाल के विचार भिन्न होने के कारण उनके बीच दरार पैदा होती है । नागपाल का असली रुप जब नीना को पता चलता है तो नीना उससे और उसके घिनौने बर्ताव और दोगले व्यक्तित्त्व से नफरत करती है । नागपाल पुरुष प्रधान संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है । इस पुरुष प्रधान संस्कृति के पुरुष का अहंकार नागपाल के व्यक्तित्त्व से झलकता है । अपने अहं के वजह से ही नागपाल नीना को अपना करियर बनाने का मौका नहीं देता । नीना की प्रसिद्धि और कामयाबी से वह ईर्ष्या करने लगता है । नागपाल अपने 'पुरुषी अहंकार' की वजह से नीना को फिल्मों में काम करने नहीं देता । कामयाब होने के लिए उपयुक्त सभी गुण नीना में मौजूद होने के बावजूद भी वह नागपाल के शोषण, अन्याय, अत्याचार और अंहकार का शिकार बनती है । नीना अपना वजूद, आस्तित्त्व खो बैठती है ।

नागपाल के दोहरे व्यक्तित्त्व के कारण नीना उससे खुश नहीं है । उसके असल मे एक और दिखाने के लिए एक चेहरे तथा स्वभाव से नीना तंग आ चुकी है । नागपाल के बर्ताव के कारण ही नागपाल -नीना इन पति-पत्नी के बीच तनाव की समस्या उभर उठी है जिसे यात्री ने सूक्ष्म सफलता से चित्रित किया है । नौकरी पेशावाली औरतें नारी-मुक्ति के नाम पर जो अन्याय करती है या आर्थिक वजह से आत्मनिर्भर होने का जो अंहभाव अपनाकर सब को खास तौर पर पती को नीचा दिखाने को कोशीश करती है उसकी वजह से भी पति-पत्नी में तनाव की समस्या निर्माण होती । आज के गतीमान जीवन में अपने बच्चों को किस तरह की तालीम दी जायें ऐसी अनेक छोटी-बड़ी बातों की वजह से तनाव की समस्या निर्माण होती हैं । इस तनाव की समस्या के कारण सुखी पति-पत्नी के बीच दरार पडती है ।

4.2.6. बेकारी की समस्या -

बेकारी संसार की सबसे बडी भयावह समस्या है जिससे सारी दुनिया त्रस्त है । आज विश्व के बडे -बडे देशों में भी यह समस्या सताने लगी है । बेकारी की चक्की में शिक्षित-अशिक्षित, लूले-लंगडे, हट्टा-कट्टा सब के सब पीसते जा रहे है । यह समस्या केवल इने-गिने लोगों को नौकरी दिलाने पर हल नहीं हो सकती । बेकारी एक बड़ी बीमारी है जो देश के विकास के जडमूल को कुतर-कुतर कर खा रहीं है । इसे

कम करने का प्रयत्न सदियों से होता आ रहा है परंतु हर देश के विकास के साथ-साथ बेकारी बढ़ती रही, इस बेकारी से संत्रस्त व्यक्ति कुमार्ग की तरफ बढ़ता रहा, ग्रामों, नगरो, महानगरो में बेकारी ने आज विक्राल रुप धारण किया है । डॉ.वाय.बी. धुमाल के मतानुसार - "स्वतंत्रता के पश्चात देशविभाजन, आर्थिक तंगी के कारण ग्रामजीवन में बेकारी और निर्धनता ने बल पकडा । जनसंख्या में निरंतर बृध्दि, भूमि की सीमितता, कुठीर उद्योगों का अभाव आदि के कारण आज ग्रामीण जीवन में बेकारी बढ़ती जा रही है । बेकार युवक अंदर-ही-अंदर टूटते जा रहे हैं । मजदूरी, लाचारी उनके स्थायी भाव बने है । शिक्षितों की बेकारी ने अशिक्षा को आश्रय दिया है । बेकारी से युवको में कुंठाओं का निर्माण हुआ है ।"[20] नौकरी न मिलने से, वैफल्य से त्रस्त नई पीढ़ी फटाफट अमीर बनने के लिए अनुचित मार्ग का आधार लेने की कोशिश में अपनी जिंदगी बर्बादी की खाई में ढकेलती है । यात्री इस समस्या का समर्थन न करते हुए इसी समस्या से जूझने की प्रेरणा दे कर आज की पीढ़ी को नई आशावादी, जीवनवादी बनने की राह दिखाते है ।

'सुबह की तलाश' का नायक 'सतीश' उच्चशिक्षित युवक है, जो नौकरी पाने के लिए भटकता है फिर भी सतीश को कहीं भी पाँव जमाने का अवसर नहीं मिलता । नौकरी न मिलने के कारण हुई उसकी मानसिक अवस्था का चित्रण यात्री ने किया है । पहले सतीश जहाँ काम करता था वहाँ कड़ी मेहनत के बावजूद भी उसे फायदा नहीं मिलता था, इसी वजह से सतीश वह फर्म की नौकरी छोड देता है । नौकरी छोडने पर सतीश का मन अपने घर जाने को तैयार नहीं होता क्योकि घर में सौतेली माँ और निवृत पिताजी की नौकरी छोंडने के निर्णय पर डांट पडनेवाली थी । बहुत सोचने के बाद सतीश अपने मित्र राकेश के घर में पनाह लेता है । राकेश के घर में रहकर सतीश फिर नौकरी की तलाश में भटकता रहता है ।

नौकरी के चक्कर में इधर-उधर भटकते वक्त सतीश को उसकी सहपाठी बिंदू मिलती है । बिंदू जानती है कि आज तक सतीश कई नौकरियाँ छोड चुका है । बिंदू सतीश को कहती है कि तुमने आज तक कई नोकरियाँ छोडी है, सच कहो तुम क्या चाहते हो ? कहीं स्थैर्य या स्थायित्त्व क्यों नहीं खोजते ? तब सतीश जो जवाब देता है वह पाठको को विचार करनें पर मजबूर करता है । सतीश कहता है - "किस बात में स्थायित्त्व खोजू ? आज सारे मानदंड बदल चुके है । सारी चीजों और रिश्तों का आधार तो आर्थिक हो गया है । सिर के ऊपर छत चाहनेवाला और

पेट के निमित्त रोटी की कामना करने वाला कभी इतनी नग्नता से पीड़ित नहीं हुआ जैसा कि आज देखने में आ रहा है । नैतिकता और संकोच, छीन-झपट और आपाधापी के नीचे पीस कर दम तोड़ चुके है ।"[21]

यात्री उपन्यास की शुरुआत में कहते है - "'सुबह की तलाश' एक ऐसे उच्चशिक्षित युवक 'सतीश' की कहानी है जो रोज़गार के लिए भटकता रहता है और उसे अपने पाँव जमाने का कहीं ठीक अवसर नहीं मिलता ।"[22] किंतु पूरा उपन्यास देखने पर यह दिखाई देता है कि नौकरी की समस्या उतनी तीव्रता से अभिव्यक्त नहीं हो पायी है जितनी होनी चाहीए थी । उपन्यास की कथावस्तु मूल समस्या को छोड़कर इधर-उधर भटकती रही दिखाई देती है । कथावस्तू के भटकने के कारण बेरोज़गारी की समस्या महत्त्वपूर्ण होते हुए भी उसकी तीव्रता पाठकों को अस्वस्थ कर पाने में असफल हुई है ।

उपन्यास का नायक सतीश कहता है - "मुझे कैरियर नहीं बल्कि एक अर्थ चाहिए - जिससे जीवन का अर्थ पकड़ में आये ।"[23] अगर यात्री स्वयं कहते है कि यह नौकरी पाने के लिए दर-ब-दर भटकनेवाले युवक की कहानी है तो रोज़गारी या नौकरी की समस्या यह उपन्यास का मूलाधार होना चाहिए किंतु यहाँ यह समस्या मूलाधार नहीं लगती है । मूल सम्मस्या की विदारकता, वास्तवता स्पष्ट होने के बजाय उपन्यास का नायक ही भटकता दिखाई देता है । सतीश कई नौकरियाँ छोड़ चुका है इसका अर्थ यह है सतीश ने नौकरी मिलने के बावजूद किसी एक जगह पर स्थिरता से नौकरी नहीं की है अथवा नौकरी पाने की कोशिश में आयी अनेक अच्छी-बूरी अनुभूति का भी चित्रण नहीं हुआ है ।

बेरोजगारी की समस्या चित्रित करने के उद्देश्य से यात्री ने यह उपन्यास लिखा है फिर भी उपन्यास में चित्रित मूल विषय से प्रामाणिक रहने का प्रयास यात्री की तरफ से नहीं हुआ है अर्थात 'सुबह की तलाश' इस उपन्यास में अत्यंत ऊपरी तौर पर ही इस समस्या का चित्रण हुआ है किंतु उसको सूक्ष्मता से या मूल समस्या को अभिव्यक्त करने की यात्री की कोशिश असफल साबित हुई है ।

"सन 1970 के बाद बेकारी की समस्या का स्वरुप क्षीण होता हुआ देखने को मिलता है । आज सरकार बेकारी को निबटाने के लिए विविध प्रकार के प्रयत्न कर रही है । स्वयंरोज़गार के लिए सरकार क़र्ज उपलब्ध करा दे रही है, शिक्षित युवकों को कृषि-व्यवसाय की ओर मुडाने के लिए सरकार कृषि औदयोगीकरण कर रही है ।

समाज कल्याण कार्यालयों व्दारा दुर्बल, दीन-दलितों को नौकरियाँ उपलब्ध कराने का प्रयत्न सरकार कर रही है ।"[24] अंत: इसी कारण इस समस्या की तरफ लेखक आज अधिक आकर्षक नहीं हो रहे है । यहाँ यात्रीने 'सुबह की तलाश' उपन्यास में बेकारी की समस्या का चित्रण तो किया है परंतु इसमें गहराई नहीं आ रही है । कहने को तो यात्रीने कहा है कि यह बेकार युवक सतीश की कहानी है लेकिन यात्री इस उपन्यास में 'बेकारी की समस्या' को सक्षमता से चित्रित नहीं कर पाये है ।

4.2.7. दहेज की समस्या -

'दहेज' विवाह जैसे मंगल कार्य में एक व्यापारिक लेन-देन का माध्यम है । विवाह दो जीवों का मिलन है, इसमें समर्पण प्रमुख है । ऐसी स्थिति में आर्थिक लेन-देन यदि उसका आधार बन जाये तो यह विवाह संस्कार बेगड़ी बन जायेगा । इससे उत्पन्न कई सामाजिक बुराईयाँ उभर जायेगी । आज शिक्षित-अशिक्षित समाज में भी दहेज की भंयकरता बढ़ गयी है । हिंदी में डॉ. राही मासूम रजा के 'कटराबी आर्जू' (1978), राजरानी पारिक के 'टूटती सीमाएँ' 1980 में दहेज की विदग्धता का चित्रण यथार्थ रुप में हुआ है । से.रा.यात्री ने सुबह की तलाश में दहेज प्रथा पर कई टिपण्णीयाँ की है ।

'सुबह की तलाश' उपन्यास में राकेश की बहन बीना के लिए उसके (बीना) जीजाजी अपनी पहचान के लड़के का रिश्ता लेकर आये थे । निकट के रिश्तेदार होने के कारण वे लोग खुल के दहेज नहीं माँग सकते थे । और उन्हें 'दहेज' तो चाहिए था इसीलिए उन्होंने बीना के चारित्र्य पर 'चारित्र्यहीन' होने की तोहमत लगा के तय किया हुआ रिश्ता तोड़ा ।

दहेज के कारण समाज में सामान्य परिवारों की दुर्दशा होती है, इस समस्या पर यात्री ने प्रकाश डालकर समाज की वास्तविकता दिखाई है । दहेज के न मिलने पर तय किया हुआ रिश्ता तोड़ने में भी समाज संकोच नहीं करता । शादी जैसे पवित्र कार्य में रुपयों को ही ज्यादा अहमियत दी जाती है । पैसों के लिए नववधू पर अन्याय, अत्याचार किया जाता है । यहाँ तक कि वधू के घर से दहेज न मिलने का जरासा भी अंदाजा लड़केवालों को हो जाये तो वे वधू को दोषी ठहराकर रिश्ता तोड़ देते है इसी का उदाहरण 'सुबह की तलाश' की 'बीना' के संदर्भ में आया है ।

दहेज के लालच में लड़केवालो को लड़की के गुणों की कोई कीमत नहीं होती । जब तक लड़केवालों को बड़ा दहेज न मिले और कायम या निंरतर न मिले तो उन्हें लगता

है कि हमारे बेटे की शादी करने का कोई लाभ नहीं है । इसी से आदमी दहेज के लालच में अपने बेटे को भी बेच सकता है, यह स्पष्ट होता है । आज समाज में दहेज की समस्या भयानक बन चुकी है । हजारों लड़कियाँ दहेज के नाम पर बली जाती है । दहेज न मिले तो लड़केवाले बिना किसी सोच विचार के रिश्ता तोड़कर नियोजित वधूपक्ष को बेईज्जत करते है, यहीं हालत बीना के घरवालों की हुई है ।

4.2.8. विवाह की समस्या -

आज समाज में विवाह एक बड़ी समस्या बन बैठा है । बेटा-बेटी के विवाह योग्य हो जाने पर उनके हाथ पीले कर देना भारतीय संस्कृति में माता-पिता का परम कर्तव्य रहता है । विवाह तय होने पर भी कभी-कभी या तो बेटे के बारे में या तो बेटी के बारे में वधू-वर पक्ष में कोई आशंका का निर्माण हो जाता है, जिसके फलस्वरुप तय हुए बिवाह भी टूट जाते है । विवाह तय करते समय अधिकाधिक परिवारों के माता-पिता लड़की की पसंदगी का अधिक खयाल नहीं करते हैं, परिणामत: भविष्य में दांपत्य जीवन में विसंवाद का निर्माण होता है । उच्च विद्याविभुषित युवतियों को भी अपनी पसंद का आधिकार माता-पिता नहीं देते हैं जिससे भविष्यत में विवाह संस्था में टूटन आती है । आज की युवतियाँ माता-पिता के इस दृष्टिकोन पर नाराजी तो व्यक्त कर सकती है, परंतु क्रांती तो कर नहीं सकती । से.रा.यात्री के 'सुबह की तलाश' की बीना इसी समस्या का शिकार बन बैठी है ।

'सुबह की तलाश' उपन्यास की विवाह की समस्या अलग स्तर की है । बीना का तय किया हुआ रिश्ता संशय के कारण टूट जाता है । लड़केवालों को यह शक है कि बीना के घर में रहनेवाले सतीश के साथ बीना का शायद प्यार का रिश्ता हो । बीना उच्चशिक्षित युवती है किंतु शादी के मामले में बीना के माँ - बाप बीना की पसंद जानने का प्रयास भी नहीं करते । इसके कारण सर्व सामान्य परिवार में जो विसंवाद उत्पन्न होता है, उस समस्या को ही इस उपन्यास में दर्शाया है । शादी जैसी अत्यंत महत्त्वपूर्ण घटना जिस युवती की जिंदगी में घटित होनेवाली हो, उस युवती की पसंद जानना भी परिवार के बुर्जग जरुरी नहीं समझते । "मैं किसी को पसंद आ जाऊ क्या यहीं काफी है - मेरी पसंद और नापसंद का कोई अर्थ नहीं है ?"[25] बीना का यह सवाल ह्रदयस्पर्शी है ।

यात्री ने 'सुबह की तलाश' में विवाह की समस्या को अधिक विस्तार से चित्रित तो नहीं किया है, बल्कि संकेत देकर इस समस्या पर प्रकाश डाला है ।

निष्कर्ष -

मानव समाजप्रिय प्राणी है । समाज में घटनेवाली अनेक भली-बूरी घटनाओं में वह सक्रिय होता हैं । उपन्यासकार भी उसी समाज का घटक होने से समाज की प्रतिमा या उसका हु-ब-हु चिंत्रण उसकी साहित्य कृति में होता है । वह जिस रचना की निर्मिती करता है वह समाज से संबंधित ही होता है । फिर चाहे उसकी कृति मनोरंजन के हेतु से लिखी हो या समाज का सुख-दुःख चित्रित करने के लिए लिखी हो । उपन्यासकार अपनी साहित्य कृति के जरिये से 'सामाजिक समस्या' को भी चित्रित करता है । समस्याओं का चित्रण करने के लिए उपन्यास यह साहित्य प्रकार महत्त्वपूर्ण है । बहुत से उपन्यासकारों ने समस्या चित्रण के लिए साहित्य के 'उपन्यास' प्रकार को चुना है ।

से.रा.यात्रीजी ने लगभग चौबीस से ज्यादा उपन्यास लिखे है । इनमें से कई उपन्यास समस्याप्रधान है उनमें से मैंने अध्ययन के लिए 'सुबह की तलाश,' 'बीच की दरार' और 'दराजों में बंद दस्तावेज' इन उपन्यासों को चुना है । ये तीनों उपन्यास समस्याप्रधान है । 'सुबह की तलाश' में 'बेकारी' की समस्या है । 'दराजों में बंद दस्तावेज' उपन्यास में 'कॉलगर्ल' का व्यवसाय करने के लिए मजबूर की हुई दुर्दैवी युवती की समस्या है, तो 'बीच की दरार' में पती-पत्नी के रिश्तों में तान-तनाव की समस्या का चित्रण हुआ है । इसके सिवा आलोच्य उपन्यासों में नारी शोषण की समस्या, विवाह की समस्या, मानसिक कुंठा की समस्या, आर्थिक दुर्बलता की समस्या आदि कई समस्याओं का चित्रण हुआ है ।

'सुबह की तलाश' उपन्यास में जीवन में स्थैर्य खोजनेवाले बेकार युवक की व्यथा चित्रित की है, पंरतु इस समस्या को चित्रित करते समय यात्री ने मूल बेकारी की समस्या की तरफ अधिक ध्यान नहीं दिया और इस समस्या पर अधिक न सोचने के कारण इस उपन्यास का मूल हेतु असफल हुआ है । यात्री ने बेरोजगारी की समस्या चित्रित करने के हेतु उपन्यास लेखन शुरु किया है किंतु पूरा उपन्यास उपकथावस्तु में जकड़ जाने के कारण मूल समस्या उपेक्षित रह गयी है, सतीश की पारिवारीक, आर्थिक स्थिति के संबंध में यात्री ने विस्तारपूर्वक कुछ भी नहीं बताया इसीलिए उसकी बेकारी की समस्या मुख्य बनने के बजाय गौन बन गयी है । 'सुबह की तलाश' उपन्यास में सतीश असल में चाहता क्या है, और वह पाने के लिए सतीश क्या-क्या कोशिशें करता है ? इसका चित्रण होना चाहिए था ।

प्रस्तुत उपन्यास 'सुबह की तलाश' में मनीश का बीना के साथ प्रेम, सतीश का सेवाभावी प्रवृत्ति से मूक-बधिरों की सेवा आदि घटनाओं की प्रमुखता के कारण सतीश की बेकारी की समस्या का चित्रण यात्रीजी गहराई से कर नहीं सके हैं । सतीश की बेकारी की समस्या गहराई से और प्रभावी ढंग से उजागर नहीं होती है ।

अपनी इच्छा के विरुद्ध 'कॉलगर्ल' का जीवन जीनेवाली 'करुणा' की कहानी 'दराजों में बंद दस्तावेज' उपन्यास में यात्रीजीने अत्यंत प्रभावी रीति से चित्रित करके जबरन कॉलगर्ल व्यवसाय में प्रविष्ठ करुणा की व्यथा को वाणी दी है । बचपन से माँ-बाप के प्यार को खो चुकी करुणा किसी मौसी के हाथों में लगती है और वहाँ से करुणा की करुण, दुर्दैवी जिंदगी शुरु होती है । आम युवतियों की तरह करुणा को जीवन जीना नसीब नहीं होता यहीं उसकी व्यथा 'दराजों में बंद दस्तावेज' उपन्यास में चित्रित हुई है । इच्छाविरुद्ध कॉलगर्ल व्यवसाय में ढकेल दी गयी युवतियों की यह प्रतिनिधिक कहानी हैं । इस उपन्यास को पढ़कर हमें देवेश ठाकुर के 'इसीलिए' उपन्यास की याद आती है, जो उपन्यास 'कॉलगर्ल' व्यवसाय में प्रविष्ठ एक नारी की करुण कथा है । युवतियों के कॉलगर्ल होने के पीछे पूरी समाज व्यवस्था कैसे जिम्मेदार है यहीं देवेशजीने प्रस्तुत 'इसीलिए' उपन्यास में दिखाया है । यहीं विषय 'दराजों में बंद दस्तावेज' में भी है । यहाँ से.रा.यात्रीने परेश जैसे विश्वविद्यालयीन अध्यापक की प्रेम की भावुकता दिखाकर यह विषद किया है कि सच्चा प्रेम पूर्व इतिहास नहीं जानता, इसीलिए वह करुणा के पूर्व इतिहास को स्पर्श करना भी नहीं जानता, इसीलिए करुणा को अपना संगी बनाकर वर्तमान में जीना चाहता है । परेश के साथ करुणा यदि विवाहबध्द होती तो यह समस्या ही उभर नहीं उठती परंतु करुणा को 'सोने का अंडा' माननेवाली मौसी परेश से करुणा का जुड़ाव होने नहीं देती । मौसी के कारण ही करुणा, की कॉलगर्ल बनने की समस्या में बढोत्री होती है । करुणा स्वयं परेश को अपना पूर्वइतिहास बताकर उससे दूर होती है । वह परेश की गृहस्थी-बनाकर बिगड़ाना नहीं चाहती है ।

'कॉलगर्ल' का जीवन जीनेवाली युवतियों की जिंदगी की समस्या कितनी तीव्र होती है इसका वास्तव रुप इस उपन्यास में स्पष्ट करने का प्रयास यात्री ने किया है । इस उपन्यास में 'कॉलगर्ल' की समस्या और उसकी 'मानसिक कुंठा' की समस्या तीव्र रुप में चित्रित हुई है । समाज में 'वेश्या,' यह समाजबाह्य होती है, ऐसे समाजबाह्य लोगों की समस्या समर्थ रीति से अभिव्यक्त करने में यात्री सफल हुए हैं ।

यात्रीजी के 'बीच की दरार' इस उपन्यास में मुख्यत: 'नारी-शोषण' और 'मानसिक कुंठा' ये समस्याएँ चित्रित हुई है । फिल्मी दुनिया की एक प्रसिद्ध सिने-अभिनेत्री और ख्यातनाम निर्देशक इनके पारिवारीक जीवन का वास्तव रुप यात्रीजी ने एक रिपोर्टर के द्वारा लिये गये साक्षात्कार से सफलता से चित्रित किया है ।

पती से होनेवाला मानसिक, शारीरिक अन्याय, अत्याचार मूक हो कर सहती है । चार दिवारों में बंद किसी जानवर जैसी उसकी अवस्था को यात्रीने चित्रित किया है । नारी केवल दिखाने की गुड़िया न हो कर उसको भी मन है, भावनाएँ हैं । नारी की भावनाओं की कदर होना जरुरी है, यह धारणा नारी शोषण की समस्याव्दारा यात्रीजी ने प्रस्तुत की है । नारी का किस तरह से शोषण होता है इसका उदाहरण 'बीच की दरार' उपन्यास विशेष उल्लेखनीय है ।

यात्रीजी के आलोच्य उपन्यासों में नारी शोषण की समस्या प्रमुख हो सकती है । 'बीच की दरार' की 'नीना' और 'दराजों में बंद दस्तावेज' की 'करुणा' दोनों शोषित नारियाँ है । नीना का शोषण पुरुषप्रधान संस्कृति के अहं से दो पतियोंव्दारा होता है और वह एक प्रख्यात अभिनेत्री होकर भी उसके अभिनय की सफलता पर दूसरे पति के जलते रहने पर उसका करियर समाप्त होता है । वह घर की चार दिवारों में बंद केवल बच्चों की पैदास करनेवाली मादा बन जाती है । पतिव्दारा उसका शारीरिक, मानसिक शोषण होता है । दूसरी नारी 'करुणा' का शोषण एक नारी व्दारा ही किया जाता है । बेसहारा औरत को सहारा देकर दूसरी औरत उसके जिस्म का सौदा करती है, उसे 'कॉलगर्ल' बनाकर अपने पेट की आग बुझाती है । करुणा का 'कॉलगर्ल' होना समाज व्यवस्था का परिणाम है । आज समाज में पूंजीपति धनिक, सेठ लोग ऐसी युवतियों को अपने भोग, पूर्ति का साधन बनाते हैं । कॉलगर्ल यह पाश्चात्य सभ्यता की संकल्पना है, जिसे भारतीय संस्कृति पर हावी करने का प्रयत्न महानगरों और नगरों में होता जा रहा है । यात्रीने इस आधुनिक युगबोध को उजागर करनेवाली समस्या को सफलता के साथ चित्रित किया है । इन समस्याओं के साथ-साथ यात्री ने आर्थिक दुर्बलता की समस्या, मानसिक कुंठा की समस्या दहेज, की समस्या, पती-पत्नी तान-तनाव की समस्या आदि कई समस्याओं पर प्रकाश डालने का काम किया हैं परंतु इन समस्याओं पर यात्रीजीने गहराई से न सोचकर हल्के से पाठकों के सामने रखने का

प्रयत्न किया है । 'नारी-शोषण' 'कॉलगर्ल' जैसी समस्याओं के चित्रण में यात्रीजी ने गंदे, बर्बर वर्णनों से बचने का काम चतुराई के साथ किया है, इससे लेखक की सभ्यता के दर्शन होतें है ।

केवल समस्याओं का निर्माण करना लेखक का उद्देश्य नहीं लगता है, हर समस्या के पीछे समाज व्यवस्था कितनी दोषी है इसे उजागर करना लेखक का मंतव्य नजर आता है । विवाह तय करने से लेकर विवाह संपन्न होने तक और विवाह संपन्न होने के उपरांत भी अनेक-सी आंशकाएँ गृहस्थी को बिगाड़ देती है । विवाह-विषयक समस्या में 'सुबह की तलाश' की बीना इस समस्या से दग्ध होती है । एक उच्चशिक्षित युवती बीना की पसंदगी का विचार भी माता-पिता नहीं करते हैं ।

यात्रीजीने केवल समस्याओं का प्रस्तुतीकरण न करके समस्याओं का समाधान भी ढूँढा हैं । बीना की शादी सतीश से संपन्न करके विवाह एवं दहेज की समस्या का समाधान ढूँढा है । सतीश को समाज सेवी बनाकर बेकारी की समस्या का हल तलाश लिया है ।

आलोच्य उपन्यासों में समस्याओं के चित्रण में यात्रीजी को सफलता प्राप्त हुई हैं ।

संदर्भ सूची :-

1) डॉ. टंडन प्रतापनारायण - हिंदी उपन्यास कला - हिंदी समिति सूचना विभाग, उ.प्र. प्रथम प्र.सं. 1965 पृ.341.

2) वही - पृ.346-347.

3) डॉ. धुमाल वाय.बी. - नाठोत्तरी हिंदी और-मराठी के सामाजिक उपन्यासों का प्रवृत्ती मूलक, तुलनात्मक अध्ययन, अन्नपुर्णा प्रकाशन, कानपुर. प्र.स.1997 पृ.44

4) वही - पृ.197.

5) यात्री से.रा. - दराजों में बंद दस्तावेज - अमित प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.सं 1969 पृ.106

6) वही - पृ.38

7) वही - पृ.91

8) वही - पृ.92

9) साप्ताहिक पोलिस टाइम्स - अनंत सरनाईक (प्रकाशक) सकाळ प्रेस (लि.) एम.आय.डी.सी. कोल्हापूर. अंक-30 पृ-1

10) यात्री से.रा. - बीच की दरार - भावना प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं 1978 पृ.91

11) वही - पृ.106

12) वही - पृ.45

13) वही - पृ.85

14) यात्री से.रा. - बीच की दरार - भावना प्रकाशन. दिल्ली, प्र.सं 1978 पृ.65

15) यात्री से.रा. - सुबह की तलाश - आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली, प्र.सं 1994 पृ.82

16) वही - पृ.106

17) वही - पृ.22

18) वही - पृ.36

19) वही - पृ.40

20) डॉ. धुमाल वाय.बी. - साठोत्तरी हिंदी और-मराठी के सामाजिक उपन्यासों का प्रवृत्ती मूलक तुलनात्मक अध्ययन. अन्नपुर्णा प्रकाशन,कानपुर, प्र.न.1997 पृ.78

21) यात्री से.रा. - सुबह की तलाश - आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली, प्र.सं 1994 पृ.22

22) वही - पृ.6

23) वही - पृ.107

24) वही - पृ.87.

25) वही - पृ.२९